एक चरम निर्देश तंत्र :

क्रूस

कार्ल एच स्टीवेन्स जूनियर

स्वर्गीय कार्ल एच स्टीवेन्स जूनियर सन २००५ तक ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच बाल्टीमोर, मेरीलैंड के पास्टर थे, और उन्होंने मेन और मैसेचुसेट्स में संपन्न सेवकाईयों की स्थापना की। सन २००८ में पास्टर स्टीवेन्स की मृत्यु के द्वारा चार दशकों में फैली सेवकाई के अन्त की निशानी बनी जिसके दौरान बाल्टीमोर में मैरीलैंड बाइबिल कॉलेज एण्ड सेमिनरी की स्थापना और “द ग्रेस हॉवर” का विकास हुआ, जो एक एंजेल पुरस्कार अर्जित रेडियो टॉक शो है जो आज भी उत्तरी अमेरिका भर में विभिन्न मसीही स्टेशनों और इंटरनेट के माध्यम से सुना जाता है।

यह पुस्तिका पास्टर स्टीवेन्स द्वारा प्रचार किये गए एक संदेश से बनाई गई है।

जब तक अन्यथा न विस्तृत किया जाए, सभी कथन पवित्र शास्त्र बाइबल से हैं। जोर देने के लिए इटैलिक्स हमारी ओर से हैं।

GRACE PUBLICATIONS
6025 MORAVIA PARK DRIVE
BALTIMORE, MD 21206
कॉपीराइट © 1996

ग्रेस पब्लिकेशन ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच की एक सेवकाई है।

www.ggwo.org

हिन्दी अनुवादों का प्रकाशन
ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
www.ggwoindia.com

विषय सूची

भूमिका. ५

अध्याय १. . . . . १०

अपना क्रूस - मेरा प्रेम और अनुग्रह - उठाओ
और मेरे पीछे चलो

अध्याय २. . . . . २१

परिस्थितियों के लिए सुंदर

अध्याय ३. . . . . २९

किसी चीज़ से गुज़रना या किसी व्यक्ति के साथ
जाना?

निष्कर्ष. ३९

रविवार की प्रार्थना सभा स्थल :

अथवा निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें :

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च

पहली मंजिल, मेघालय हॉउस,

सेक्टर - ३०ए, वाशी स्टेशन के

सामने, वाशी, नवी मुम्बई

कीमत - २५ रुपए

भूमिका

एक व्यक्ति का निर्देश-तंत्र वह समर्थन प्रणाली होती है जिसके आधार पर वह सारी जाँच-पड़ताल करता है| निर्देश-तंत्र उसकी धारणाओं को आधार देता है और निर्णयों का समर्थन करता है| आपका निर्देश-तंत्र आपका मापदण्ड है, और एक हिसाब से वह आपके लिए निर्णय लेता है| जब आपका कवच नीचे होता है, तब आपका निर्देश-तंत्र स्वचलित पायलट होता है| आपका निर्देश-तंत्र यह प्रकट करता है कि आप कौन हैं (नीतिवचन २३:७)|

यह पुस्तिका यह प्रकट करती है कि मेरे अनुसार **परमेश्वर** हर **विश्वासी** के निर्देश-तंत्र में क्या चाहता है| यह वही है जिसकी ओर यीशु मसीह ने चकमक जैसे अपने चेहरे को **पक्का** किया (यशायाह ५०:७; लूका ९:५१)| यह वही है जिससे वह नहीं हटने वाला था (मत्ती १६:२३)| यह वही है जिसमें पौलुस महिमा करता था (गलातियों ६:१४)| यह यीशु मसीह का क्रूस है|

गुलगुता के लकड़ी के टुकड़े से कहीं ज़्यादा, हम इस बात में ध्यान दे रहे हैं कि उसने क्या हासिल किया| “जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया” (२ कुरिन्थियों ५:२१अ)|

हममें से कई इस पंक्ति से अति परिचित हो गए हैं। एक क्षण के लिए, निष्कलंक मेमने के बारे में सोचें। वह जो पाप से अज्ञात था, पाप बन गया। उसने पापरहित संपूर्णता की अवस्था को त्याग कर एक व्यभिचारी, एक समलैंगिक, एक चोर, एक झूठे, और एक बकवादी की अवस्था ले ली। यीशु मसीह हमारा पाप बना – अपने पिता के नथुनों में एक गंदी बदबू। यह पहचान इस हद तक थी कि पिता अपने पुत्र की ओर देख भी नहीं सका।

सूली पर हमारे बदले प्रायश्चित करने वाली मृत्यु के द्वारा यीशु मसीह ने हमारे पापों का भुगतान किया (मरकुस १५:३४; यशायाह ५३:१०)। वहाँ क्रूस पर उसने वह कार्य पूरा किया जो पिता ने उसे हमारे बदले में पूरा करने को दिया था (यूहन्ना १९:३०)। वहाँ, उस क्रूस पर, **परमेश्वर** नीचे आकर इंसान तक पहुँचा और कहा, "मैं तुमसे इतना प्रेम करता हूँ" (१ यूहन्ना ३:१६; ४:१०)।

निःसंदेह, तुम्हारी ज़िन्दगी में समस्याएँ हैं। तुम्हारे पास तकलीफभरी शादी, बहुत बुरी नौकरी, या तंग आर्थिक परिस्थितियाँ हो सकती हैं, और तुम वीरता में उन चीजों को अपने जीवन का "क्रूस" कहते हो। पर, यीशु मसीह के पास एक ही क्रूस है, और वह चाहता है कि वह क्रूस तुम्हारा निर्देश-तंत्र बने। वह चाहता है कि *वह* क्रूस तुम्हारा मानसिक और भावनात्मक समर्थन प्रणाली बने।

सम्पूर्ण कर्म मसीहियों के तौर पर हम जो कुछ भी **विश्वास** करते हैं, उसका आधार यह है: कि क्रूस *उसका* क्रूस है, और उसका क्रूस *हमारा* क्रूस है। इसलिए, जब हम "अपना

क्रूस उठाते हैं” वह हमेशा उसके क्रूस के साथ पहचाना जाना चाहिए|

हमें याद रखना है कि क्रूस का काम पूरा हो चुका है| यूहन्ना १९:३० में, यीशु मसीह ने पुकारा, “पूरा हुआ!” *तेतेलेस्ताए (tetelestai),* इस वाक्य के लिए यूनानी शब्द है, जो हर मसीही की परम विजय की पुकार है| “उद्धार की तुरही” (लूका १:६९ और भजन संहिता १८:२ में, यीशु मसीह) से आने वाली आवाज, यह घोषणा हर दोष लगाने वाले दुष्टात्मा को थरथराती और भगाती है|

मशगूलता उपयोग पैदा करती है

जब एक **विश्वासी** स्वयं को क्रूस में मशगूल करता है, **परमेश्वर** का पूरा *अगापाओ (agapao)* और *कैरिस (charis)* उपयोग में आने लगते हैं और जाने जाते हैं|

अगापाओ वह यूनानी शब्द है जो **परमेश्वर** के शर्तरहित **ईश्वरीय** प्रेम के लिए इस्तेमाल है| १ यूहन्ना ३:१ का अनुवाद कितना सच है: “देखो कितना विदेशी प्रेम है यह”| उसका क्रूस, साहित्यिक यूनानी की नज़र से देखे जाने पर, यह साबित करता है कि उसका प्रेम हममें आनंद करता है, हमें सब चीजों से ऊपर कीमती मानता है, और हमें त्यागने या हमारे बिना काम करने के लिए तैयार नहीं है (वीस्ट/Wuest, इफिसियों ५:२५)|

कैरिस **परमेश्वर** के अनुग्रह का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द है, जो **परमेश्वर** का **ईश्वरीय** परिवहन का यंत्र है, जो उसके अगापाओ को हमारी उसे अर्जित या कमा पाने की अक्षमता के बावजूद हमारे लिए

प्रस्तुत कराता है। उसका अनुग्रह खुलकर दी गई उसकी कृपा है, जो बदले की आशा नहीं करती, देने वाले के मुक्त दिल के द्वारा प्रेरित, और हमेशा आगे छलांग लगाती है (वीस्ट):

"व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो, परंतु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ" (रोमियों ५:२०)।

आम यूनानी मूर्तिपूजक दिमाग कभी भी दुश्मन को ऐसा प्रेम देने की सोच या कल्पना भी नहीं कर सकता था। यह साबित करता है कि मसीह अपने साथ हमारे देखरेख की असीम अत्यधिक भरपूरता की नई समझ लेकर आता है। यह अनुग्रह वयस्क पुत्र, **परिपक्व विश्वासी** पैदा करता है, जो "लावारिस देश" के अनुभवों, अर्थात जिन्दगी की परीक्षाओं और हानि से गुज़र पाते हैं। यह **विश्वासी परिपक्वता** की बाधाओं को तोड़ते हैं और "अंधकार के खजानों" (यशायाह ४५:३) की छिपी हुई खुशहाली में पहुँचते हैं।

अरे, इस तरीके का मसीहीपन आम नहीं है! हम ऐसे युग में जी रहे हैं जब सुसमाचार तो लोकप्रिय है, पर क्रूस नहीं। हम करोड़ों रुपये खर्च करने वाली मुहिमों द्वारा सुसमाचार के संदेश को लोकप्रिय बनाने की कोशिशें देखते हैं। बदकिस्मती से, उनमें वे अक्सर *प्रभावित* **विश्वासियों** की बजाए *ढोंगी* मसीही पैदा करते हैं। जैसा कि ए. डबल्यु. टोज़र ने कई सालों पहले कहा:

"प्रचार, जैसा हम आज जानते हैं, वाकई कुछ असली मसीही पैदा करता है, परंतु जिस आत्मिक वातावरण में आज कई आधुनिक मसीही पैदा हो रहे हैं, उससे जोरदार आत्मिक उन्नति संभव नहीं है। वाकई, सम्पूर्ण इवैन्जेलिकल संसार,

काफी हद तक स्वस्थ मसीहियत के लिए प्रतिकूल है| और मैं आधुनिकतावाद के बारे में भी नहीं सोच रहा हूँ| बल्कि मैं, उस बाइबल पर **विश्वास** करने वाले झुंड के बारे में सोच रहा हूँ जो परम्परानिष्ठता का नाम लेती है| हम एक अशक्त तरीके के मसीहीपन की ओर धर्मांतरित लोग बना रहे हैं जो नए नियम के **विश्वासियों** से बहुत कम समानता रखते हैं| हमारे समय का औसत मुँह-बोला बाइबल वाला मसीही **सच्चे** संतत्व का मनहूस मजाक है| फिर भी हम इस भ्रष्ट प्रकार के धर्म को प्रसार करने के लिए संस्थाओं और इमारतों के पीछे करोड़ों रुपये लगाते हैं और उस व्यक्ति पर आक्रमण करते हैं जो उसकी बुद्धिमता को चुनौती देने का साहस करता है|"

मत्ती ११:३० के अनुसार, हम वह जूआ उठाते हैं जो आसान है और वह बोझ जो हल्का है, जब हम **विश्वास** के मनोभाव के साथ हमारे प्रभु के सताव की पहचान में प्रतिदिन अपना क्रूस लेते हैं (फिलिप्पियों १:२९)|

यह हमारी मृत्यु के द्वारा होता है कि हम *उसके* क्रूस को हमारे चरम आदर्श तंत्र में लाने तक उन्नति करते हैं| प्रार्थना करो कि वह बढ़े, और हम घट सकें (यूहन्ना ३:३०)|

अध्याय एक
अपना क्रूस - मेरा प्रेम और अनुग्रह - उठाओ और मेरे पीछे चलो

"तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपका इंकार करे और अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले।

"क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा" (मत्ती १६:२४-२५)|

हर **विश्वासी** को अपनी इच्छाशक्ति से अपना क्रूस प्रतिदिन उठाने का निर्धारण करना होगा| उसे कीमत गिनकर, स्वयं को इंकार करके, और अपने जीवन को अर्पण करके, लगातार जान-बूझकर यीशु मसीह के पीछे चलना होगा|

"अतः हे भाइयों, मैं तुमसे **परमेश्वर** की दया स्मरण दिलाकर तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान करके **परमेश्वर** को समर्पित कर दो| यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है।

"इस संसार के अनुरूप न बनो, परंतु अपने मन के नए हो जाने से तुम परिवर्तित हो जाओ कि **परमेश्वर** की भली, ग्रहणयोग्य, और सिद्ध इच्छा को तुम अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों १२:१-२)|"

एक बार जब क्रूस का जीवन अनुभव कर लिया जाता है, तो वह प्रत्येक विश्वासी के लिए बहुत कीमती होता है| इससे साफ़ पता चलता है कि हम अपने जीवनों में सब चीजों से ज्यादा यीशु मसीह के क्रूस को रखना चाहते हैं| जैसे-जैसे हम अपना क्रूस उठाते हैं – जो मसीह का क्रूस है – यह पूरी तरीके से समझते हुए कि उसमें क्या मिलता है, वह हमारे परमेश्वर के साथ पहचान का ज़रिया बन जाता है| अतः, हमारी व्यक्तिगत जिन्दगी के लिए परमेश्वर की योजना में क्रूस प्रकट हो पाता है|

सिर्फ कुछ लोग हैं जो हर सुबह बुद्धिमानी और जोश के उस हावभाव में उठ पाते हैं, जिसमें उनके प्राणों में परमेश्वर के ईश्वरीय गुण वाकई में प्रक्रिया में हैं| सत्य यह है कि कुछ ही विश्वासी हैं जो पूरी समझ के साथ इस जीवन-परिवर्तन करने वाली सच्चाई में अपना क्रूस उठाते हैं| ज्यादातर लोग परमेश्वर की उनके जीवन के लिए योजना को कबूल करते हैं और उसमें भलाई की आशा करते हुए प्रवेश करते हैं, मसीह का क्रूस उठाए बिना| जब एक कठिन समस्या आती है, तब उस परीक्षा को वे अपना "क्रूस" समझते हैं| ज्यादातर मसीहियत इस तरीके की सोच से ग्रसित है| कई सारे मुँहबोले विश्वासियों को क्रूस के व्यवहारिक उपयोग की कोई खबर नहीं है और न ही इस बात की कि क्रूस को अपना चरम निर्देश-तंत्र रखने का क्या मतलब है?

क्रूसः हमारे जीवन का प्रावधान

कुल मिलाकर मेरे जीवन के लिए क्रूस **परमेश्वर** का प्रावधान है| मैं प्रतिदिन अपने जीवन में स्वयं को इंकार करता हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि क्रूस क्या है| मैं उसे उठाने का निर्णय लेता हूँ| मैं समझता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ| मानसिक

और भावनात्मक तौर पर, मैं सोच-समझकर प्रतिदिन क्रूस उठाता हूँ। या तो मैं स्वयं को पूरी तरह से इंकार करता हूँ, या मैंने क्रूस नहीं उठाया है।

यदि हम एक दिन में यह देख पाते कि **परमेश्वर** हमारे व्यवहार में क्या देखता है, तो हमें यह समझ में आता कि हमारी उत्तेजनाओं और अव्यवस्था होने का कारण यह है कि हम अपना क्रूस उठाने में असमर्थ रहे हैं। अक्सर, हम सोचते हैं कि हमारी परेशानियाँ हमारा क्रूस हैं – मानो कि वे **परमेश्वर** द्वारा हमारी उन्नति के लिए भेजी गई थीं। बाइबल क्रूस के बारे में यह नहीं कहता है। क्रूस परेशानी का प्रतीक नहीं है। क्रूस ऐसी वस्तु है जो मैं स्वेच्छा से उठाता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने अपने स्वर्गीय पिता के आज्ञापालन में अपना क्रूस उठाया।

"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव होः

"जिसने **परमेश्वर** के स्वरूप में होकर भी **परमेश्वर** के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझाः

"वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गयाः

"और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

"इस कारण **परमेश्वर** ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ हैः

"कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें;

“और **परमेश्वर** पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है|” (फिलिप्पियों २:५-११)|

जब एक व्यक्ति अपनी इच्छाशक्ति की खास क्रिया (मन का एक **निश्चित** भाव) और अपनी भावनाओं की सहमति के द्वारा बिना रोक-टोक के, अपना क्रूस उठाता है, तब वह **परमेश्वर** के जीवन को प्रगट करने की **अद्भुत** क्षमता हासिल करता है| पूरे दिन और रात, वह यह सीखता है कि अपने जीवन को बचाने के लिए उसे एक वस्तु भी नहीं करनी है| अपनी इच्छाशक्ति की क्रिया के तौर पर, वह अपने बचाव के लिए कुछ भी नहीं करता| उसने क्रूस को अपना मानकर उठाया है, और वह आगे बढ़ता है, आशिष या मुसीबत की परवाह किए बिना, पूरी तरह से यह समझते हुए कि उसने पहले ही **परमेश्वर** और उसके क्रूस को जीवन के प्रावधान के तौर पर चुन लिया है|

यह निर्णय **परमेश्वर** की ओर सवालों को खत्म कर देता है| यह पाप भरे आदम के स्वभाव की प्रतिक्रिया को खत्म कर देता है| यह साफ़ तौर पर **विश्वासी** की प्रतिबद्धता और समर्पण को प्रगट कर देता है| उसने कुछ अनोखा पाया है: कि वह **परमेश्वर** के साथ क्रूस की सामर्थ्य में आगे बढ़ सकता है|

प्रतिदिन व्यायाम की खासियत

बहुत कम लोग यह करते हैं| कुछ उठते हैं, अपना भक्ति का समय बिताते हैं, और अपने दिन में लग जाते हैं, पर बहुत कम पूरी तरीके से यह समझते हैं कि एक व्यक्तिगत क्रूस उठाना और उस दिन के लिए इसे पूरा करने का क्या मतलब

होता है। अपने दिन की पहली परिस्थिति में मरकर प्रवेश करने की कल्पना करें – मानसिक और भावनात्मक तौर पर – हर वस्तु के लिए और हर व्यक्ति के लिए। "तुम मर चुके हो, और तुम्हारा जीवन **परमेश्वर** में मसीह के साथ छिपा हुआ है" (कुलुस्सियों ३:३)। तुम्हारी भावनाएँ हर प्रकार की प्रतिक्रिया से आज़ाद हैं। अब तुम आत्महित या आत्मसंरक्षण से भरे हुए नहीं हो।

क्रूस पर कोई "**कर्तव्य**" नहीं है। दिन के समय तकलीफ देने वाले मुद्दों के दौरान चुपके से फुसफुसाकर जाने की जरूरत नहीं है। कोई दबाव और कोई तनाव नहीं है, बल्कि केवल **परमेश्वर** के समक्ष सम्पूर्ण उपलब्धता है।

जब तक एक व्यक्ति यह सिद्धांत नहीं समझता है, वह सम्पूर्ण कर्म के विश्राम के वादे के देश कनान की ओर देख भी नहीं सकता। इस तरीके से हम आदर के पात्र (१ थिस्सलुनीकियों ४:४), कुम्हार के हाथ से साँचने योग्य मिट्टी (यिर्मयाह १८:२-६)बनते हैं। जीवन एक प्रसन्नता बन जाता है, जब हम **परमेश्वर** को अपना मालिक, मसीह को अपना प्रभु, पवित्र आत्मा को अपना अगुवा, वचन को सत्य को प्रगट करने वाला और भरपूर जीवन को अपना अनुभव बनने देते हैं।

अक्सर, **विश्वासी** परीक्षाओं से गुजरते हैं, और वे नहीं समझ पाते कि ऐसा क्यों। असलियत यह है कि हम परिस्थितियों में आसानी से नाराज इसलिए होते हैं, क्योंकि हमने उस दिन स्वयं का इंकार नहीं किया और क्रूस नहीं उठाया है। औसत **विश्वासी** एक "व्यवहारिक" **विश्वासी** नहीं होता है। वह मौकों पर **विश्वास** करता है। वह यदि आसान है

तो **विश्वास** करता है| वह यदि आराम है तो **विश्वास** करता है| वह तब **विश्वास** करता है, जब रस्सी के अन्त में होता है या जब वह बिलकुल चरम-अंत पर दीवार के खिलाफ़ दबा दिया जाता है| परंतु वह एक अनुभवी, प्रतिदिन का **विश्वासी** नहीं होता है; वह यह नहीं समझता है कि उसकी इच्छाशक्ति के द्वारा, उसे प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना होगा|

प्रेरित पौलुस ने १ कुरिन्थियों १५:३१ में कहा, "मैं प्रतिदिन मरता हूँ|" यह हिसाब लगाकर कि वह प्रभु यीशु मसीह के साथ क्रूसित किया गया है, पौलुस अपनी इच्छाशक्ति के सह-क्रूसित होने की प्रतिदिन की इस **निश्चित** क्रिया में प्रवेश कर चुका था| वह अपने पुराना पापी स्वभाव को कलवरी में यीशु मसीह की मृत्यु में शामिल किये जाने पर **विश्वास** करने के सोच समझकर लिए गए निर्णय के द्वारा, अपनी इच्छाशक्ति से प्रतिदिन अनुभव में इस सत्य को दुबारा जागृत करता था :

"अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (रोमियों ६:४)|" यह डर की क्रिया नहीं थी| **विश्वास** के द्वारा अनुग्रह से, पौलुस जैसे जीता था, वैसे ही मरा – डर से आज़ाद, स्वयं के लिए मरा हुआ, और मसीह में जीवित|

प्रतिदिन मरने के द्वारा विश्वास और प्रेम का जोड़

लूका ९:२३ में यीशु ने कहा, "...यदि कोई व्यक्ति मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इंकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले|" सावधानी से इस पर ध्यान दें| उसने ऐसा क्यों कहा कि हमें *प्रतिदिन* अपना क्रूस उठाना

है? यीशु **परमेश्वर** के प्रेम का चरित्र रखकर विश्वास में जीने का एक पाठ सिखा रहा था| देखिए, यह संभव है कि पहाड़ों को हटाने वाला **विश्वास** हो और प्रेम ना हो (१ कुरिन्थियों १३:२)- वचन के द्वारा **विश्वास** हो, परंतु प्रेम के चरित्र के बिना| लेकिन यदि हमारे पास **परमेश्वर** का वचन, स्पष्ट रूप से है, *और* **परमेश्वर** का पवित्र आत्मा **परमेश्वर** का प्रेम हमारे दिलों में पैदा कर रहा है, और यदि यह दोनों साथ में हमारे जीवन में क्रियाशील हैं, तब हमारे पास ऐसा **विश्वास** होता है जिसमें प्रेम का गुण होता है|

प्रेम के चरित्र के साथ **विश्वास** “नाम लेने और दावा करने” वाले **विश्वास** के उस पार जाता है| यह वह **विश्वास** है जो प्रेम के द्वारा सेवा करता है (गलातियों ५:६)| **विश्वास** का यह गुण पहाड़ों को हटा सकता है, परंतु उन्हें हटाने की प्रक्रिया में **परमेश्वर** के प्रेम के गुण के साथ|

लूका ९:२४ में, यह बताने के बाद कि वह क्रूस पर जाने वाला था और वह पुनर्जीवित होने वाला था, यीशु ने अपने चेलों को एक पाठ सिखाया, परंतु वे उसका मतलब नहीं समझ पाए| वह कह रहा था, “मैं चाहता हूँ कि अपने जीवन में, अपने प्राणों की छोटी छोटी चीज़ों के लिए, तुम यह सीखो कि तुम कैसे खोओ जिससे तुम पा सको, कैसे हारो कि तुम जीत सको, कैसे शामिल रहो कि तुम्हारे पास रह सके|” दूसरे शब्दो में, समर्पण करने की कोशिश मत करो - सिर्फ शामिल हो जाओ| **परमेश्वर** ने तुम्हारे समर्पण का खयाल तब कर दिया, जब तुमने उसके सह-क्रूसित होने में प्रवेश किया|

अतः, अपने अंगों को शामिल कराओ जिससे पुनरुत्थान का आनंद उठा सको।

"खोना" शब्द का साधारण मतलब होता है, ऐसी वस्तु को हार जाना जिसे तुम्हारी स्वेच्छा के द्वारा तुम पा सकते थे। "प्रतिदिन" का मतलब होता है प्रत्येक दिन। यह हमारे अपने क्रूस की ओर संकेत कर रहा है। **विश्वासी** के लिए अपना क्रूस उठाने का मतलब यह होता है कि **परमेश्वर विश्वासी** के कदमों को क्रमबद्ध करेगा, जिससे कलवरी के साथ पहचान में उसका स्वयं का क्रूस होगा। तब यूनानी भाषा कुछ खूबसूरत बात उभार कर लाती है: "अपना स्वयं का क्रूस उठाओ, और ऐसा करते हुए मेरे पीछे चलते रहो।"

क्या तुम जानते हो कि उसने ऐसा इस तरह से क्यों कहा? अक्सर, जब लोग एक "क्रूस" (जैसा वे समझते हैं) अनुभव करने लगते हैं, तब वे यीशु मसीह के पीछे उसके क्रूस के द्वारा आना बंद कर देते हैं। वे अपने "क्रूस" में व्यस्त हो जाते हैं, जो उसके क्रूस से अलग है। कई लोग विधिवादिता या स्वाभाविक अच्छे कर्मों से जीते हुए स्वयं का इंकार करना बंद कर देते हैं। चूँकि वे उस **विश्वास** में क्रियाशील नहीं हैं जो प्रेम के द्वारा कार्य करता है, वे हतोत्साहित होते हैं और मानसिक कार्यों में प्रवेश करते हैं एवं उलझन में, उदासीन और प्रतिक्रियात्मक हो जाते हैं।

अतः वह यह कह रहा है: "मैं चाहता हूँ तुम स्वयं का इंकार करो और जो क्रूस मैंने तुम्हें दिया है उसे उठाओ। मैंने तुम्हारे जीवन की योजना में तुम्हारे कदमों को तय किया है। जैसे-जैसे तुम अपना क्रूस उठाते हो, मेरे आंतरिक जीवन और

मेरे आंतरिक वचन के द्वारा मेरे पीछे चलते रहो - और मेरे पीछे चलना बंद मत करो!”

आत्मिक पेशियों का निर्माण

लोग आत्मिक पेशियाँ निर्माण कर सकते हैं, जिससे उनके मन और भावनाएँ उनकी इच्छाशक्ति की आज्ञा मानें। सुबह में, तुम अपने शरीर को उठने को कहते हो, और वह काम पर जाने के लिए उठ जाता है। तुम स्वयं से कहते हो, “मैं आज वह कचरे जैसा खाना नहीं खाऊँगा,” और जब तुम्हारी इच्छाशक्ति के पास ऐसी पेशियाँ होती हैं, तुम वह कचरे जैसा खाना नहीं खाते हो। तुम कहते हो, “मैं सही विश्राम करने वाला हूँ,” और प्रभु में, वचन के द्वारा, तुम्हारी इच्छाशक्ति ने सही निर्णय लेने के लिए पेशियाँ विकसित कर ली हैं, जिससे तुम वह विश्राम कर सकते हो जो तुम्हे करना चाहिए। तुम कहते हो, “मैं चिंता कर सकता था। मैं लालसा से गुज़र सकता था। परंतु मैं ऐसा नहीं करूँगा!” और यीशु मसीह के द्वारा और तुम्हारे अंदर बस रहे वचन के द्वारा, चिंता करने की बजाय तुम **परमेश्वर** पर भरोसा करते हो।

तुम्हारी इच्छाशक्ति **परमेश्वर** के वचन और बहुमूल्य पवित्र आत्मा के द्वारा, **परमेश्वर** के प्रेम के गुणों में **विश्वास** के विश्राम के द्वारा **अद्भुत** पेशियाँ विकसित करती हैं। इसलिए तुम्हारी इच्छाशक्ति उपदेश की दीवारों के साथ शासन करने लगती हैं। तुम शैतान, दुष्टात्मा-ग्रस्ति, और देह से आनेवाले सभी जालों, प्रक्षेपों और उकसावों का सामना करते हो, जिससे तुम एक अजीब विजय देखते हो। यह “अजीब” इसलिए है, क्योंकि कुछ समय पहले यह तुम्हारे पास नहीं थी। अचानक

से तुम पाते हो कि तुम आराम में हो| तुम्हारे पास शांति है| तुम प्रेम से प्रेरित हो| तुम दुसरों की ओर दयालुता अनुभव कर रहे हो, और यदि तुम गिरते हो, तो तुम ईमानदार होने में तेज हो| यह बड़ी तकलीफ़ नहीं है, क्योंकि तुम उसे अलग करते हो और आगे बढ़ते हो|

इस बात के विषय में सबसे खूबसूरत बात यह है कि अपनी आत्मिक पेशियों का व्यायाम करने के द्वारा तुम एक देश के राजा से भी बढ़कर हो| तुम एक शहर के शासक से भी महान हो (नीतिवचन १६:३२)| तुम शैतान पर, दुष्टात्माओं पर, परिस्थितियों पर, देह पर, रहस्यों पर, अदृश्य चीजों पर राज कर सकते हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर एक अदृश्य मसीह है| तुम्हारे पास उपदेश है, जो ठोस है - जिसमें **विश्वास** के द्वारा **निश्चय** है| तुमने भक्तिभरा चरित्र विकसित किया है क्योंकि पवित्र आत्मा **परमेश्वर** का वह प्रेम पैदा करता है, जिसमें तुम विश्राम कर सकते हो| तुम्हें कर्मों पर या किसी और चीज पर विश्राम करने की जरूरत नहीं है| तुम उसके चरित्र, उसके प्रेम, उसके स्वभाव, उसके वादों, उसके वचन में विश्राम करते हो|

परमेश्वर से यह कहने की बजाय, “इस पर या उस पर ध्यान दो,” यह कहो, “मैं जानता हूँ मैं कौन हूँ, पर आप अपने अनुग्रह का वचन याद करो| आप मेरी ओर अपने प्रेम का वचन याद करो|” (और वाकई में, वह करता है – परंतु यह तुम्हें अच्छा महसूस कराता है कि तुम वह याद कर रहे हो, जो वह याद करता है|)

वाकई में, जो **विश्वासी** मसीह के द्वारा स्वयं में राज्य करता है, जो अपनी लालसाओं, अभिलाषाओं, और डरों के ऊपर **विश्वास** के विश्राम के द्वारा शासन करता है, वह इस संसार के प्रत्येक गुणवान और बुद्धिमान व्यक्ति से ज्यादा महान है|

अध्याय दो
परिस्थितियों के लिए सुंदर

"हमारे **परमेश्वर** के नगर में, और अपने पवित्र पर्वत पर यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है! सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुंदर और सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है, राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिरे पर है" (भजन संहिता ४८:१-२)।

सिय्योन पर्वत की "ऊँचाई" उसकी परिस्थिति की बात करती है – **परमेश्वर** की बनावट में उसकी खास जगह थी – जिससे लोग पीढ़ियों तक उसकी ओर देखें और वह सब याद करें जो **परमेश्वर** ने वहाँ पूरा किया।

परिस्थितियाँ यीशु मसीह की सुंदरता और सत्य में उसके साथ हमारे व्यक्तिगत अनुभव को प्रकट करने के लिए आवश्यक हैं। **परमेश्वर** हमें परिस्थितियों में रखता है कि हम स्वयं से चुनाव न करें, जिससे उसकी महिमा हो। अनुग्रह में बढ़ने के लिए हमें विभिन्न परिस्थितियों को अनुभव करने की जरूरत होती है। **परमेश्वर** को परिस्थिति में हमारी जरूरत होती है, जिससे वह उस पर कब्ज़ा करे और उसमें जीवन पैदा करे; परिस्थिति को हमारी जरुरत होती है कि हमें बढता देखकर अनुग्रह देख सके; और संसार को परिस्थितियों में

हमारी जरुरत होती है, जिससे लोग **परमेश्वर** को कार्य में देख सकें|

इसलिए वह सभी परिस्थितियों में सुंदर है| उसने हमारे जीवन में प्रत्येक और सभी परिस्थितियाँ हमारे पैदा होने से पहले तय कर दीं| **परमेश्वर** की योजना में कोई इत्तेफाक नहीं है| जब हमें यह **निश्चय** होता है कि सब कुछ तय किया गया है, तब हम अपनी इच्छाशक्ति के द्वारा अपना क्रूस उठा सकते हैं और आज्ञापालन के द्वारा उसे प्रसन्न कर सकते हैं| तब वह हमारे जीवन से उन चीजों को बाहर निकालता है जो अवांछनीय हैं|

प्रभु यीशु मसीह परिस्थितियों के लिए सुंदर है, क्योंकि वह चाहता है कि हम आज्ञापालन सीखें, यहाँ तक कि सताव के द्वारा भी| “पुत्र होने पर भी उसने दु:ख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी” (इब्रानियों ५:८)| हमें पैनों को ठोकर मारने की बजाय, तकलीफों से सीखना चाहिए| पवित्र आत्मा का विरोध करने की बजाय, जिससे हम परिस्थिति के लिए **परमेश्वर** का प्रेम और अनुग्रह ग्रहण करने में अक्षम और नाकाबिल हो जाते हैं, वह चाहता है कि हम इच्छाशक्ति के द्वारा स्वयं का इंकार करने और उससे कुछ सीखने के लिए अपना क्रूस उठाकर के आनंद, शांति, सामर्थ्य, प्रेम और मकसद में आगे बढ़ने के द्वारा आज्ञापालन सीखें|

उसका अनुग्रह पर्याप्त है

प्रभु यीशु मसीह हमें दिखाना चाहता है कि उसका अनुग्रह प्रत्येक परिस्थिति के लिए पर्याप्त है| वह हमें कभी नहीं छोडेगा, न त्यागेगा (इब्रानियों १३:५)| कोई परिस्थिति नहीं

है, जिसका हम सामना करते हैं, जो उसके **विश्वास** से खाली हो| वह हर चीज़ से हमारे साथ गुज़रता है, बिलकुल अंत तक| वह परिस्थितियों के लिए खूबसूरत है, क्योंकि वह हमारे जीवन में से वे सब वस्तुएँ, जो **परमेश्वर** की ओर से नहीं हैं, लेता है और उनके द्वारा कुछ सुंदर वस्तु बनाता है|

"और हम जानते हैं कि जो लोग **परमेश्वर** से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों ८:२८)|

"क्योंकि सब वस्तुएँ तुम्हारे लिए हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर **परमेश्वर** की महिमा के लिए धन्यवाद भी बढ़ाए" (२ कुरिन्थियों ४:१५)|

यह **परमेश्वर** को अत्यंत सुंदर बनाता है| वह सुंदर है क्योंकि उसने एक क्रूस प्रदान किया है, जो हमें स्वयं का इंकार करने का मौक़ा देता है, जिससे परिस्थिति अपने आप में भारी और बोझिल नहीं होती|

यदि हमें उसके क्रूस के बिना स्वयं का इंकार करना पड़ता, तब परिस्थिति एक बोझ, **परमेश्वर** के लिए कुछ करने का धार्मिकरूप बन जाती| यह ऐसा है कि जैसे **परमेश्वर** को जाने बिना उसके जैसा बनने के लिए मजबूर किया जाना| **परमेश्वर** ने ऐसा नहीं कहा है, "मैं चाहता हूँ कि तुम परिस्थितियों में अच्छे बनो और कार्य करो|" उसके विपरीत, वह कहता है, "यह एक परिस्थिति है, और यह मेरा क्रूस है| अपनी इच्छाशक्ति की एक क्रिया के द्वारा स्वयं का इंकार करो और **विश्वास** के द्वारा मेरी मृत्यु में प्रवेश करो| उस तरह से,

तुम्हारा 'स्वयं' दूर किया जाएगा, और तुम्हारे द्वारा कार्य करने के लिए बची हुई एकमात्र ताकत मैं रहूँगा।"

"परंतु हमारे पास वह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् **परमेश्वर** ही की ओर से ठहरे" (२ कुरिन्थियों ४:७)।

हमें सिर्फ आवश्यकता है उस **विश्वास** की जो प्रत्युत्तर देता है, उस प्रेम की जो अनुभव करता है और उस अनुग्रह की जो अभी है। मुझे अब ज़ोर लगाने या संघर्ष करने की जरुरत नहीं है। कलवरी ने अति उत्तम प्रावधान किया है। सहमृत्यु में कठिन क्या हो सकता है?

आज्ञापालन में उदासी आनंद बनती है

याकूब १:२-४ कहता है, "हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनंद की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे **विश्वास** के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।"

यदि हम देह के कार्यों और धार्मिक तरीकों में किसी परिस्थिति से गुज़रते हैं, वह आनंद की नहीं बल्कि दुःखभरी बात होती है। परंतु वह व्यक्ति जिसके पास **परमेश्वर** का प्रेम है, **परमेश्वर** की मर्ज़ी पूरी करने में दुःखभरा बोझ अनुभव नहीं करता है। "क्योंकि **परमेश्वर** का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएँ कठिन नहीं" (१ यूहन्ना ५:३)।

यह सिद्धांत हमारे जीवन और संबंधों में क्रांति लाएगा, यदि **विश्वास** के क्षेत्रों में समझा जाए, और पुनरुथान में एहसास किया जाए, और क्रूस उठाए जाने के द्वारा आज्ञापालन के माध्यम से व्यक्तिगत उपयोग में अमल किया जाए| जिसे संसार एक त्रासदी जैसा देखता है, वाकई में हमारे आज्ञापालन के हर पहलू में आनंद ला सकता है| हम सच में यह कह सकते हैं कि यीशु मसीह परिस्थितियों के लिए खूबसूरत है|

हर परिस्थिति के लिए एक **ईश्वरीय** लक्ष्य और एक न समझ आने वाला महत्व है, जो बिलकुल सत्य है और अपनी **ईश्वरीय** वैधता में बिलकुल सम्पूर्ण है| वह सत्य यह है कि कोई भी इंसान वह पात्र बन सकता है, जिसमें यीशु मसीह समय के अंतर्गत उद्धार का खज़ाना, **परमेश्वर** की योजना का अनन्त मूल्य, और **परमेश्वर** की परिस्थिति की इस वक्त की **सच्चाई** को प्रकट करेगा|

"क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा ***क्लेश*** हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है;

"और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परंतु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परंतु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं" (२ कुरिन्थियों ४:१७-१८)|

यह संभव है कि किसी सुबह हम उठेंगे और, शायद पाएँगे कि इस देश के कुछ हिस्से प्रलय जैसी घटनाओं के द्वारा नष्ट कर दिए गए हैं| किसी सुबह तुम उठने पर यह पा सकते हो कि कोई अत्यंत नज़दीकी व्यक्ति गुज़र गया| हमें जीवन का

सामना यह जानते हुए करना है, कि जैसे **परमेश्वर** के पास यीशु मसीह को उसकी मनुष्यता में जीवित करने की सामर्थ्य थी, यह वही शक्ति है जो मेरे लिए परिस्थितियों को खूबसूरत बनाती है| मेरा जीवन नहीं हिलाया जा सकता, यदि मैं यीशु मसीह के "**विश्वास** के संसार" में जी रहा हूँ| आधार कभी भी नहीं गिरेगा, यदि आधार अनुग्रह है| और यीशु मसीह के साथ मेरी संगति कभी खत्म नहीं होगी, यदि मेरी नज़रें क्रूस के लेंस के द्वारा उस पर टिकी हुई हैं|

परमेश्वर *हमसे बातें कर रहा है*

परमेश्वर हमारे पास आता है और कहता है, "सुनो, मैं तुम्हें कुछ साधारण चीज़ें सिखाना चाहता हूँ| इसलिए तुम्हारा जीवन विभिन्न परिस्थितियों से भरा जाएगा| मैं तुम्हें यह नहीं बताऊँगा कि वह क्या होंगी, परंतु परिस्थितियों के बीचो-बीच मैं अचानक और अजीब चीज़ें करूँगा| मेरे पास तुम्हारे जीवन में हर चीज़ को नियंत्रण करने का अधिकार है| मैं तुम्हें समस्तरीय घरेलू चीज़ों के संबंध में एक भी वादा नहीं करूँगा| मैं उद्धार के द्वारा, परंतु जरुरी नहीं कि तुम्हारे जीवन की रोजमर्रा की वस्तुओं से, कई चीज़ों का वादा करूँगा| मैं तुम्हें उन चीज़ों का वादा नहीं करूँगा, जिनकी तुम धरती पर इच्छा करते हो, और मैं धरती पर तुम्हारे स्वार्थी सपनों को पूरा करने में मदद करने का वादा नहीं करूँगा|

"एक **विश्वासी** के रूप में, परिस्थितियों के लिए, तुम्हारे पास यह है| तुम्हें यह नहीं जानना है कि तुम्हारे भविष्य में क्या है| परंतु मैं तुम्हें यह वादा करता हूँ कि यदि तुम **परमेश्वर** के वचन का आदर करोगे, यदि तुम **परमेश्वर** के आत्मा से भरपूर

बने रहोगे, और यदि तुम प्रतिदिन, अपनी इच्छाशक्ति की एक क्रिया के द्वारा, अपना क्रूस उठाओगे, तुम उस **विश्वास** में आगे बढ़ोगे जो प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलातियों ५:६)। तुम्हारा जीवन **विश्वास** से **विश्वास** के लिए (रोमियों १:१७), सामर्थ्य से सामर्थ्य के लिए (भजन संहिता ८४:७), और महिमा से महिमा के लिए(२ कुरिन्थियों ३:१८) बढ़ेगा! हर समय में मेरी ओर देखो और उसे आनंद की बात समझो। तब, मैं हर परिस्थिति में तुममें अपना कार्य करूँगा।

"तुम्हारे जीवन में कभी भी ऐसा समय नहीं आएगा, जब मेरी योजना कार्यरत न हो। कोई भी तुम्हारे जीवन के लिए मेरी योजना में दखल नहीं कर पाएगा, क्योंकि धरती और आकाश के सारे अधिकार मुझे दिए गए हैं (मत्ती २८:२०), और मैं तुम्हारे कदम तय कर रहा हूँ (भजन संहिता ३७:२३)। प्रत्येक चीज़ मैं तुम्हारे लिए करता हूँ (२ कुरिन्थियों ४:१५), और सभी चीज़ें मेरी ओर से आती हैं (२ कुरिन्थियों ५:१८)। क्या तुम तैयार हो? कई सारी अचानक अचरज भरी चीज़ें आएँगी, पर वे सब तुम्हारी मनुष्यता में **परमेश्वर** को प्रकट करेंगी।

"अब, यदि तुम्हारे लिए जीना मसीह नहीं है, तो कई बार तुम रोते हुए दूर चले जाओगे – सत्य के आँसू नहीं, बल्कि स्वार्थ के आँसू। मसीह के मन के बिना, तुम भावनात्मक परेशानियों में दूर चले जाओगे, क्योंकि तुम्हें वह नहीं मिला जो तुम अपने जीवन के लिए चाहते थे। मैं कई ऐसी चीज़ें होने दूँगा जो तुम्हारी सांसारिकता और स्वार्थी इच्छाओं को पूरी तरह से नष्ट करेंगी। सत्य यह है कि मैं तुम्हारे जीवन में बिलकुल उलटा करूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे जैसे

बनो। मैंने अपना जीवन तुम्हारे लिए दिया। जब तुम सोचते हो कि तुम्हें किसी के ध्यान की आवश्यकता है, मैं उस व्यक्ति को अनुपलब्ध बना सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी मदद के लिए मुझ पर टिको और **परमेश्वर** के धीरज की ताकत और **परमेश्वर** के अनुग्रह के दान में पूरी तरह से **विश्वास** से चलो।"

परमेश्वर हम से इतनी सटीकता से बातें कर रहा है, क्या तुम सुन रहे हो?

अध्याय तीन
किसी चीज़ से गुज़रना
या किसी व्यक्ति के साथ जाना?

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस **विश्वासी** से जीवित हूँ जो **परमेश्वर** के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया" (गलातियों २:२०)|

सिर्फ आत्मिक रूप से निरक्षर व्यक्ति क्रूस को एक बोझ मानेंगे| वे अपनी परीक्षाओं और सीमाओं को अपना "क्रूस" कहेंगे, परंतु ऐसा नहीं है| क्रूस वह चीज़ है, जो हम उठाते हैं, और जिससे हम गुज़रते हैं, जब हम स्वयं का इंकार करते हैं| तब हमारे जीवन में कुछ भी नहीं बचता जो हमें तकलीफ दे सके, क्योंकि हम मरे हुए हैं! खुद के अहसास की भाषा यह है, "यह मेरा 'क्रूस' है| मुझे इससे गुज़रना होगा|" यह कितना विरोधाभास है| तुम्हे किससे गुज़रना है? गुज़रने के लिए क्या है? क्या बाइबल सत्य है?

यदि मेरा स्वार्थी स्वभाव, जरूरतें, भावनाएँ और सोच क्रूसित हैं, तो मुझे किससे गुज़रना है? मुझे यह समझना होगा कि मैं किसी चीज़ से नहीं गुज़र रहा हूँ| मैं किसी व्यक्ति के साथ गुज़र रहा हूँ| हमारा यह मनोभाव होता है कि हम किसी चीज़ *से* गुज़र रहे हैं जब हम यह नहीं समझते हैं कि हम

किसी व्यक्ति *के साथ* जा रहे हैं| मेरा जीवन **परमेश्वर** में मसीह के साथ छिपा है, और मैं मरा हुआ हूँ| "क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है"(फिलिप्पियों १:२१)| "मसीह मेरा जीवन है" (कुलुस्सियों ३:४)|

अपनी सोच के जीवन के स्रोत को जाँचें

मैं अक्सर इस तरीके की बात सुन सकता हूँ: "पिछले दो महीनों से, मैं यहाँ के दूसरे लोगों जैसा नहीं रहा हूँ| मैं किसी चीज़ से गुज़र रहा हूँ!" यह सच है कि हम सब अपने ऐसे कुछ क्षणों से गुज़रते हैं, तब भी उस तरीके का वाक्य उतना ही असमय है जितना शैतान| "क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।" (नीतिवचन २३:७)| अतः यदि तुम भी वैसा ही सोच रहे हो, तो वह बाइबल के अनुसार नहीं है, और वह सत्य नहीं है|

कभी भी ऐसा समय नहीं होता, जब **विश्वासी** को "किसी चीज़ से गुज़रना पड़ता हो|" वाकई, उसे मृत्यु की परछाई की तराइयों से गुज़रना पड़ सकता है, पर वह जगह सिर्फ परछाइयों की जगह है| परछाइयाँ किसी को मार नहीं सकती| इतना ही नहीं, जब तक रोशनी न हो, तो परछाइयाँ कभी नहीं हो सकती| यह मुझे यह बताता है कि हर तराई में एक रोशनी है|

विचारों, अनुमानों और परिस्थितियों की परछाइयाँ फड़फड़ाते हुए, आसानी से डरे हुए, दैहिक मसीहियों का नुकसान करती हैं| उनके अनुभव गुलामी के न अंत होने वाले चक्र बन जाते हैं| वह व्यक्ति जो हमेशा यह कहता है, "मैं किसी चीज़ से गुज़र रहा हूँ," अगले महीने फिर से पुराने निर्देश-तंत्र से शुरू करेगा| ऐसा जीवन वाकई में उदासीन है|

उस व्यक्ति के लिए बेहतर यह होगा, कि वह समझे कि यह उस व्यक्ति का सिर्फ मनोभाव है, जो जीवन को निराशापूर्ण बनाता है| हम मृत्यु की देह में जीते हैं, और हमारी इकलौती आशा यीशु मसीह का जीवन अपने पास रखना है|

क्रूस हमें क्लेश के पार बुलाता है

हम एक संसार में हैं, जहाँ **परमेश्वर** ने वादा किया है कि **क्ले**श होगा| प्रलयकारी आपदाएँ हो सकती हैं, यहाँ तक कि सीमित परमाणु युद्ध भी| एक ब**च्चे** की मृत्यु हो सकती है, एक प्रिय परिवारजन गुज़र सकता है, तुम्हें कैन्सर हो सकता है| तुम किसी दिन सुबह उठकर वित्तीय गिरावट में हो सकते हो, जिसमें खाध्य-पदार्थों की कीमत उड़ान भर रही हों और मकान की तंगी पड़ रही हो| यीशु मसीह ने कहा कि इस संसार में **क्ले**श होगा| फिर भी, **विश्वासी** जीवन को ऐसे नहीं देखता जैसे कि वह किसी चीज़ से गुज़र रहा हो| वह किसी व्यक्ति के अंदर निवास करता है, और वह व्यक्ति **परमेश्वर** है| इसलिए, आत्मा से परिपूर्ण **विश्वासी** अपने क्रूस को प्रतिदिन उठाकर स्वयं को इंकार करता हुआ, **परमेश्वर** में विश्वास के द्वारा जीता है| यह मसीही प्रतिदिन यीशु मसीह के पीछे चलता है, जैसे-जैसे वह प्रतिदिन **परमेश्वर** के साथ सोचता और जीता है|

भक्तिपूर्ण आदमी या औरत लगातार उन चीज़ों पर सोचता है, जो सत्य, स**च्ची**, शुद्ध, दयालु, धर्मसंगत और सुंदर हैं| वह जिस परिस्थिति में स्वयं को पाता है, उसमें संतुष्ट होता है| "यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूँ, क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूँ, उसी में संतोष

करूँ” (फिलिप्पियों ४:११)। हर दिन वह पूरी तरह से **परमेश्वर** के लिए जीता है और आत्मसुरक्षा के लिए कोई इच्छा नहीं रखता| उसके पास उन चीज़ों को छोड़कर किसी में व्यस्त रहने की इच्छा नहीं होती, जो उसकी जिंदगी की बारीकियों में **ईश्वरकृत** परिस्थितियों के द्वारा **परमेश्वर** उसे प्रगट कर रहा है|

सम्पूर्ण कर्म **विश्वासी परमेश्वर** की योजना को अपने लिए सर्वश्रेष्ठ मान कर ग्रहण करता है, और वह **विश्वास** करता है कि यह **परमेश्वर** की संपूर्ण मर्ज़ी है| वह जानता है कि **परमेश्वर** उसके जीवन की बारीकियों का खयाल रखने के लिए **पर्याप्त** प्रेम करता है (भजन संहिता ११३:६), इसलिए वह सभी चीज़ों को आनंद की बात मानता है| यदि वह चीज़, जिसको पाने के लिए उसने बहुत मेहनत की थी, उसके विरोध में चली जाती है, तो **परमेश्वर** की महिमा हो! अद्‌भुत! उसे पता है कि यह उसके फायदे के लिए हुआ है, जिससे वह प्रभु यीशु के स्वरूप में बदला जाए (रोमियों ८:२९)|

क्रूस फर्क पैदा करता है

क्रूस **परमेश्वर** के हमारी ओर भरपूर खयाल को प्रगट करता है, और वह भरपूर खयाल हमारे जीवन में गुज़र सकने वाली किसी भी परीक्षा के ऊपर जाता है| क्रूस फर्क पैदा करता है| हमें ध्यान रखना होगा कि सब बातें भलाई में बदल दी जाती हैं, जैसा कि रोमियों ८:२८ में कहा गया है, जिससे सभी चीज़ों के द्वारा, हम मन के नए बनाए जाने के परिवर्तन (रोमियों १२:२) के द्वारा पुत्र के स्वरुप में बदले जा सकें| यह तभी संभव है जब हम प्रतिदिन अपना क्रूस उठाएँ|

कई लोग परिस्थितियों से गुज़रते हैं और जानबूझ कर अपना उत्पीड़न पैदा करते हैं| वे वाकई में कुछ चीज़ "गुज़रने" के लिए ख़ोज लेते हैं, जिससे दुःखी रहने का बहाना मिल सके| वे अपने व्यक्तित्व की कमज़ोरी में जीते हैं, क्योंकि वे देह की लड़ाई से थक चुके हैं, और इस सोच में धोखा खा चुके हैं कि त्याग देना ज्यादा आसान है| औसत व्यक्ति अपने स्वावलंबन और जिद्द की वज़ह से, क्रूस को बिलकुल ना जानते हुए अपने मनोभावों की अभक्ति में जीता है|

एक अद्भुत विकल्प है| यीशु मसीह में, **ईश्वर** बोध और नम्रता के द्वारा, **परमेश्वर** स्वयं को हमें हर परिस्थिति में प्रगट करता है|

वह *अनुग्रह* प्रकट करता है:

"अब **परमेश्वर** जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवंत करेगा" (१ पतरस ५:१०)|

वह *प्रेम* प्रकट करता है:

"सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है| और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम **परमेश्वर** की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ" (इफिसियों ३:१८-१९)|

वह **विश्वास** बरसाता है:

"अब **विश्वास** आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।"(इब्रानियों ११:१)|

वह प्रकट करता है कि वह चाहता है कि हम उसके प्रेम में हम कभी भी की गई आशा से बढ़कर आगे जाएँ (इफिसियों ३:१७)| हर परिस्थिति में, **विश्वास** के द्वारा हम नए पहलुओं का अनुभव कर पाएँगे और उसके व्यक्तिगत स्पर्श के द्वारा **परमेश्वर** की नई समझ पाएँगे| तब "परिस्थितियों" का सबकुछ इन्सान के बहुत फायदे के साथ **परमेश्वर** की महिमा की बखान करेगा| "वह प्रतिदिन हम पर फायदे लादता है" (भजन संहिता ६८:१९)|

जब मैं स्वयं को इंकार करने का निर्णय लेता हूँ और अपना क्रूस उठाता हूँ, मैं यह **परमेश्वर** की महिमा के लिए करता हूँ| मैं हर बात को आनंद गिनता हूँ, और स्वयं को गंदा और घृणापूर्ण नहीं होने देता| मैं **परमेश्वर** की महिमा करना चुनता हूँ और इस ज़िम्मेदारी के हर क्षण का आनंद उठाता हूँ| **परमेश्वर** के साथ सोचते हुए, मैं क्रूस से संबंधित उपदेश के प्रत्येक वचन के साथ ज्यादा से ज्यादा बचाया जाता हूँ|

क्रूस चुनने के लिए स्वतंत्र

मेरे जीवन के प्रत्येक हिस्से में, मैं अपनी इच्छाशक्ति के द्वारा क्रूस चुनने के लिए ज़िम्मेदार हूँ| मानसिक और भावनात्मक तौर पर, मैं अपने पूरे शरीर को जीवित बलिदान के तौर पर **परमेश्वर** को सौंपता हूँ (रोमियों १२:१-२), जिससे मेरा मन परिवर्तित होगा और उसके असीमित वचन के प्रकाशन में उसके अथाह अनुग्रह के द्वारा नया बनाया जाएगा| तब, मैं **परमेश्वर** की अद्‌भुत योजना में, उन कदमों के द्वारा जो उसने मेरे लिए तय किए हैं, पूर्णतया बदला जाऊँगा|

परमेश्वर का मकसद हमें बिलकुल उसके पुत्र के जैसा बनाना है| "और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली" (फिलिप्पियों २:८)| हमारा इकलौता मकसद उसके जैसा बनना है| चाहे उसने हमारे लिए जो भी रास्ता चुना हो, यह पूरा करना उसका काम है| वह **परमेश्वर** है| मैं सिर्फ उसका दास हूँ| मैं नहीं चुनता हूँ कि वह मुझे अपने पुत्र जैसा कैसे बनाएगा, क्योंकि उससे मेरी मर्ज़ी **परमेश्वर** की योजना से ऊपर उठायी जाती है| अतः, **विश्वासी** को यह कहना होगा, "मैं यहाँ हूँ, प्रभु, मुझे भेज" (यशायाह ६:८)| तब, आत्मिक रोमांच शुरू होता है|

हमें कभी नहीं पता होता कि आगे क्या आ रहा है| हमें शायद न पता हो कि चीज़ें क्यों होती हैं, परंतु हम जानते हैं कि हम उन सभी को आनंद की बात मान सकते हैं| **परमेश्वर** का न्याय द्वेषी दुश्मन **द्वारा** थोपे गए दुःख और ज़ख्म की पीड़ा को कभी भी प्रबल नहीं होने देगा| परंतु इस बीच, हमें यह एहसास करना होगा कि हम वाकई मरे हुए हैं, और मसीह के द्वारा जीवित किए गए हैं|

मेरी मनसा स्वयं को बुरे दिन से गुज़ारने की नहीं है, और मैं एक क्षण के लिए भी निराश होने की आशा नहीं करता| मैं अपने स्वयं के जीवन को गुस्सा होने के ज़रिए बचाने की आशा नहीं करता| मैं दुश्मन और उसके दुष्टात्माओं पर वे जो करते हैं और लोगों की उनकी ओर प्रतिक्रियाओं की वजह से गुस्सा हो सकता हूँ, पर मैं इस हफ्ते एक भी चीज़ से "गुज़रने" की आशा नहीं रखता हूँ| तुम्हें पता है क्यों? यह इसलिए कि मैं

स्वर्गीय स्थानों पर, इन सब के ऊपर बैठा हूँ (इफिसियों २:६)| वह मुझे हरी चराइयों में बैठाता है| मैं आराम में हूँ| मुझे कोई घटी नहीं है|

मसीही जीवन शैली में चरम सीमा

कितने सारे लोग **अतृप्त** सांसारिक लालसाओं की निराशा की असंतुष्टि में जीते हैं और **परमेश्वर** के प्रावधानों की असलियत और आनंद का कभी अनुभव नहीं करते हैं| फिर भी, **विश्वासी** जो ऊपरी चीज़ों में अपना मन लगाता है (कुलुस्सियों २:२) अपने **परमेश्वर** रहित इंसानी स्वभाव की दैहिक लालसाओं और इच्छाओं को क्रूसित किया है (गलातियों ५:२४)| उसने न सिर्फ धर्मशास्त्र के ज्ञान के अनुसार **परमेश्वर** ने जो *कहा* है उसे ग्रहण किया है, बल्कि वह **परमेश्वर** ने जो *किया* है उसका अनुभव करता है| वाह, मसीही जीवन शैली का कैसा शिखर है! अतः, वह **परमेश्वर** की उपस्थिति और मकसद में जीता है|

वह **विश्वासी** कह सकता है, “यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे कुछ घटी न होगी” (भजन संहिता २३:१)| स्वर्गीय स्थानों पर पहले ही बैठा हुआ और परिस्थितियों के होने से पहले हरी चराइयों में लिटाया गया, परिस्थिति अंततः उसके करुणा ग्रहण करने तक पहुँचती है| **परमेश्वर** लगातार उसे शांत झरनों के पास ले जाता है| वही हालात जो नज़र से तूफ़ान जैसी दिखती है अंदर से उसके लिए शांत झरना बन जाती है, क्योंकि उसे पता है कि कौन उसकी अगुवाई कर रहा है| “वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है” (भजन संहिता २३:३)| यह

विश्वासी जानता है कि जो कुछ उसके जीवन में चल रहा है, वह **परमेश्वर** की धार्मिकता के रास्तों में, दोबारा चलना है| यह जाने का कोई खराब रास्ता नहीं है| सत्य यह है कि यह जीने का बाइबल संगत तरीका है| कोई अचरज नहीं कि पवित्र आत्मा भजन, गीत और कविताएँ देता है| वे हमें हर परिस्थिति की सुन्दरता को समझने में मदद करते हैं, जब हम रुककर उस प्रभाव का एहसास करते हैं जो वह हमारे जीवन में कर सकती है|

हम **परमेश्वर** की महिमा के लिए रचे गए थे (यशायाह ३:७)| हम उसकी प्रसन्नता के लिए बनाए गए थे (प्रकाशित वाक्य ४:११)| हम उसकी महिमा करने के लिए बनाए गए थे (१ कुरिन्थियों १०:३१)| इन कारणों की वजह से हमारी रचना हुई है| हमें इस प्रकाशन के लिए "धन्यवाद" कहना जरूरी है|

एक **विश्वासी** के तौर पर उस **परमेश्वर** के साथ जो अत्यधिक व्यक्तिगत है, यह फर्क नहीं पडता कि परिस्थिति क्या है| यीशु मसीह खूबसूरत है| मेरे पास कोई सवाल नहीं है, सिर्फ **विश्वास** है| मेरे पास कोई निराशा नहीं है, सिर्फ प्रेम है| मुझे कोई बदलाव नहीं चाहिए, सिर्फ मसीह द्वारा बदला जाना चाहिए| मैं स्वयं के लिए कुछ नहीं ख़ोज रहा हूँ| मैं सिर्फ उसे प्रकट करने के मौके ख़ोज रहा हूँ (यिर्मयाह ४५:५, लूका १९:१०,१३)| यह उस चरम निर्देश-तंत्र - यीशु मसीह के क्रूस - पर ध्यान लगाने से आता है |

निष्कर्ष

“मुझ पर, जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊँ,

“और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ कि उस भेद का प्रबन्ध, क्या है, जो सब के सृजनहार **परमेश्वर** में आदि से गुप्त था।

“ताकि अब कलीसिया के द्वारा, **परमेश्वर** का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए।

“उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी|”

“...अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त हो जाओ;

“और **विश्वास** के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर,

“सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है,

"और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम **परमेश्वर** की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।

"अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है

"कलीसिया में और मसीह यीशु में उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन" (इफिसियों ३:८-११, १६-२१)|

क्रूस **विश्वासी** के लिए स्वतंत्रता का स्थान है| क्रूस सारी मानव जाति के लिए सर्वश्रेष्ठ केंद्र बिंदु है, जो **परमेश्वर** के विगत **गुप्त** अंधकार और उसके हमेशा उपस्थित निमंत्रण के बीच में अकेला खड़ा है: कि चाहे हम कोई भी हों, हमने कुछ भी किया हो, या हम कहीं भी जा रहे हों, स्वतंत्र होकर और बिना रुकावट की सुलभता रखते हुए हम उसे देखें| यह चरम अनुग्रह वाले मसीही के लिए है (याकूब ४:६)|

"अतः जब हम **विश्वास** से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **परमेश्वर** के साथ मेल रखें,

"जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने है, हमारी पहुँच भी हुई, और **परमेश्वर** की महिमा की आशा पर घमण्ड करें" (रोमियों ५:१-२)|

परमेश्वर सच में तुम्हारी परवाह करता है

यीशु तुमसे गहरा प्रेम करता है। बहरहाल, यह तथ्य कि सभी ने पाप किया है, हमें **परमेश्वर** से अलग करता है (रोमियो ३:२३; ६:२३)। फिर भी, **परमेश्वर** तुम्हारे लिए परवाह करता है और वह अपना प्रेम तुम्हारे साथ बाँटने के लिए एक तरीका प्रदान करता है।

इन्सान के लिए यीशु मसीह का प्रेम इतना महान था कि वह आया और मानव जाति के सभी पापों के लिए क्रूस पर मरा। उसने तुम्हारे लिए अपना लहू बहाया जिससे तुम क्षमा पा सको और अनन्त जीवन पाओ।

इकलौती चीज जो वह तुमसे माँगता है कि तुम साधारण **विश्वास** में अपनी ओर उसके चरित्र और प्रेम पर भरोसा करते हुए और उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हुए, उसके पास आओ। "जो कोई भी प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह बचाया जाएगा।" (प्रेरितों के काम २:२१)

बस प्रार्थना करें, *"प्रिय यीशु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ। मैं तुम्हें अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता हूँ। मुझे इतना प्रेम करने के लिए धन्यवाद कि तुमने मेरे लिए जान दी जिससे मैं तुम्हारे साथ अनन्त जीवन बिता सकता हूँ, आमीन।"*

वह वादा करता है कि वह कभी तुम्हे प्रेम करना बंद नहीं करेगा और न ही वह कभी तुम्हें छोड़ेगा या त्यागेगा (इब्रानियों १३:५)। बाइबल पढ़ने, प्रार्थना करने, और एक अच्छे बाइबल पर **विश्वास** करने वाले चर्च में भाग लेने के द्वारा उसके साथ अपने संबंध का विकास करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च

वेबसाइट: www.ggwoindia.com

शब्दावली (Glossary)

निर्देश-तंत्र	Frame of reference
प्रभावित **विश्वासी**	Possessing Christians
ढोंगी मसीही	Professing Christians
प्रावधान	Provision
आत्मसंरक्षण	Self-preservation
केंद्र बिंदु	Pivot point
चरम	Ultimate

हिन्दी अनुवादित संस्करण के विषय में

इस पुस्तिका की आत्मिक जीवन में कीमत को ध्यान में रखते हुए ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च की टीम के सदस्यों के योगदान से इसका अनुवाद और प्रकाशन किया गया है। स्थानीय तौर पर अधिक जानकारी के लिए आप हमें संपर्क कर सकते हैं:

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च (GGNMC)
वाशी, नवी मुंबई, भारत
+ (91) 97020 81387
ई-मेल: mail@vashichurch.com
वेबसाइट: www.ggwoindia.com

आत्मिक परामर्श के विषय में : www.ggwoindia.com

ग्रेटर ग्रेस कलीसिया के विभिन्न स्थानों पर चर्च, प्रार्थना सभाएँ, बाइबल स्कूल, यूथ सेवकाई, काउन्सेलिंग सेवकाइयाँ हैं कृपया जानकारी के लिए संपर्क करें :

मुंबई एवं उत्तर भारत : www.ggfmumbai.org
बेंगलुरु एवं दक्षिण भारत : www.ggfblr.org

पास्टर कार्ल एच स्टीवेंस की हिन्दी पुस्तिकाओं की सूची :

बस **परमेश्वर** *को स्वयं से प्रेम करने दो*

प्रतिदिन भोर में **परमेश्वर** *से मुलाक़ात*

परमेश्वर *से खुलकर ग्रहण करो*

पवित्र आत्मा से तुम्हारा सम्बन्ध कैसा है

बीमा न्याय आसनः दुःख या आनन्द में प्रस्तुति

सिंहासन के शब्द

साजिश का उत्थान